# आदर्श साधु

A Picture of An Ideal Sadhu-Saint

आदर्श साधुत्व का सच्चा निवास कहां है
यही दिखाने वाली एक अनुपम पुस्तक

लेखक : श्री बंसी

वसंत पंचमी
1999

आबू के आनन्दमस्त योगी

आदर्श महात्मा
श्री शान्तिविजय जी महाराज

His Holiness Jagatguru Acharyasamrat
Greatest Yogiraj Bhattarak Purandar Shree
**VIJAY SHANTI SURISHWARJI BHAGWAN**
MOUNT ABU (India).

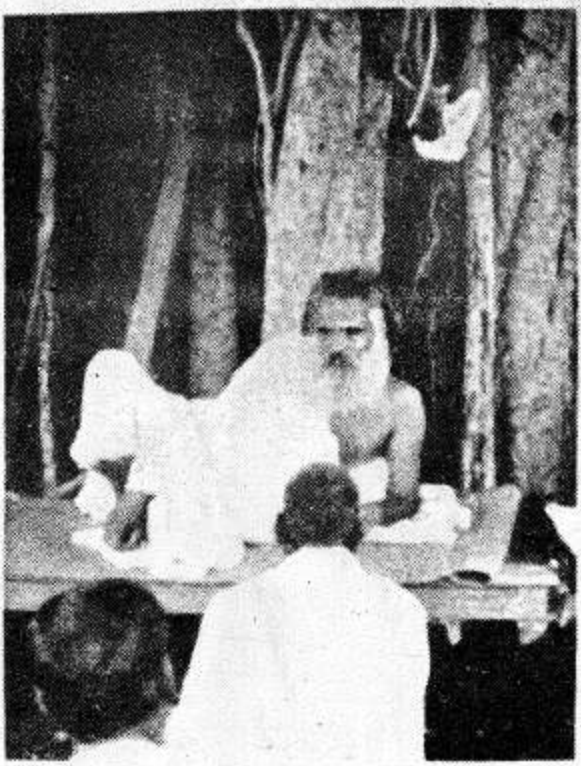

परमपूज्य महान् योगिराज जगद्गुरु
श्री श्री श्री १००८ श्री विजय
शांति सूरिश्वरजी भगवान

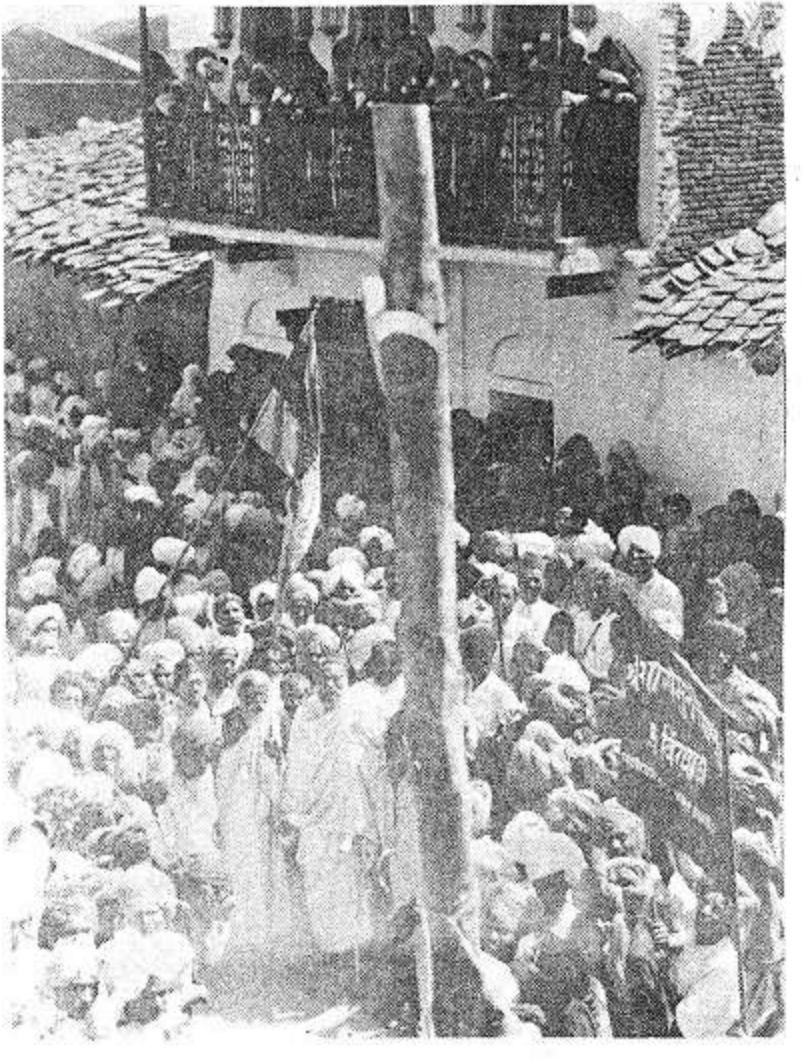

# आदर्श-साधु

सिद्धि! सिद्धि!
परम शान्ति और सिद्धि की शोध में
जीवन की तेजस्वी मशाल लेकर
आत्मा और परमात्मा का योग साधने
निकले हुए पूज्य साधु!
दुनिया की ऋद्धि को छोड़ कर।
परलोक की सिद्धि के साधक प्रिय साधु!
आपको वन्दन हो! वन्दन हो!

पृथ्वी पर का अमृत-बिन्दु।
वही आदर्श साधु! धन्य हो!

साधु का दर्शन इतना मधुर हो,
कि दृष्टि जहां पड़े वहीं ठहर जाय।
ऐसा अमृत जिसके प्रति-अङ्ग में भरा हो,
और चेहरा इतना निर्मल व रसिक हो,
कि नेत्र सदैव पिया ही करें।
ऐसा विरल सौन्दर्य वहां लहराता हो,
कि फिर-फिर देखने को चित्त चाहे।
ऐसी रस-भरी मधुरता टपकती हो,
कि उनकी प्रति रेखा पुनः पुनः पढ़ा करें।

चेहरे की रम्यता ही
दर्शक को हर्ष के आँसू से नहलावे।
मुख पर मन्द-मन्द हास्य की
स्वच्छ और अलौकिक सुरखी झलक रही हो।
दर्शक को मोहित कर दे ऐसा
निर्दोष मोहक स्वरूप वहां बैठा हो।
चेहरे में मृदुता व नम्रता के अतिरिक्त
और कुछ न हो।
दिव्य प्रेम के तेज के सिवा वहां
एक भी भाव का दर्शन न हो।
सुन्दर व्यक्तित्व की छाप
यही उनके चेहरे का लक्षण हो।

आदर्श साधु;
सच्चे साधु के प्रतापी चेहरे पर
इतनी ही भव्यता और सादगी हो।
इस चेहरे में प्रभु का ठण्डा स्पर्श हो
तथा हंस मुख चेहरा और कोमल भाव,
देखने वाले पर जादू करें।
भलमनसाई और भोली उदारता की
गहरी छायाएँ वहां पड़ी हों।
ऐसा कोई मधुर चेहरा जो
स्वाभाविक ही सब को शीतलता देवे,
इनकी पवित्र छाया के नीचे बैठते ही
आम्रवृक्ष के समान ठण्डक मिले,
दिल की जलनें शान्त हो जायें,
संसार के सन्ताप-दुःख भूल जायँ,
और जीवन की सारी थकावट दूर होकर
घबराहट भूल कर अखण्ड तृप्ति का अनुभव हो।

वही परम-सिद्धि के पथ पर
दौड़ता हुआ
विजय का डङ्का बजाने वाला
आदर्श साधु।

साधने को निकला जो,
वही सच्चा साधु।

संसार के क्षेत्र में
संस्कारी वातावरण जमाकर
साधना के शिखर पर
वेगवती चाल से चढ़ रहा है, वही सच्चा साधु।
परम तत्व की खोज में
ज्ञान और क्रिया के सहारे
आत्मा के पूर्ण वैभव से दौड़ रहा है,
वही सच्चा साधु।
साधु याने शान्त-चित्त का साधक,
जिसकी साधना का अन्तिम फल "सिद्ध"
ऐसे सिद्ध बनने को मंथन करता है वहीं साधु।
भीतर छिपे हुए सिद्धत्व को प्रगटाना चाहे,
और जगत के समस्त तुच्छ जञ्जालों को छोड़कर
"साधना" यही जिसका प्रिय मंत्र है
वही आदर्श साधु।

सच्चा साधु,
अपने जीवन की प्रत्येक पल को
'अडिग ध्यान' में रोक कर
निर्वाण की जटिल-समस्याओं को सुलझाता है।
विश्व के समस्त ऊँचे तत्वों का शिरोमणि
मोक्षका जो उग्र उपासक बने,

और साधना के मन्दिर का सच्चा पुजारी बनकर
आत्म-योग की धूनी धधकाता है,
वही आदर्श साधु।

आत्म दर्शन,
जिसके जीवन का नित्य रटन हो!
रत्नत्रय की आराधना
यही जिसका सच्चा साधन हो,
आत्म झरने में जिसका प्रतिदिन 'रमण' हो,
और मुक्ति-स्वातन्त्र्य मन्दिर
जिसका अन्तिम विश्राम स्थल हो,
वही आदर्श साधु।

'साधुत्व' यह आत्मा की 'उच्च' दशा है,
जीवन का यह वायुयान है।
अनेक जन्मों के गुणाराधन से
प्राप्त हुई यह पवित्र स्थिति है।
मन के शुद्ध अध्यवसायों की यह बहुमूल्य कमाई है।
हृदय की भांवनाओं की साक्षात् प्रतिध्वनी है।
आत्मा के अमृत का यह बहता झरना है।
मनुष्य की आत्मिक उन्नति का महा चिन्ह है।
'साधुत्व' यह जीवन का जाज्वल्यमान प्रकाश है।
विषय-तृष्णा की अग्नि से झुलसे हृदय को,
परम शान्ति दायक यह हिम झरना है।
मस्तरामों का मधुर आलाप और
अलख योगियों का वह सुन्दर गान है।
उन्नत भावनाशाली का स्वादिष्ट-भोजन
केवल एक 'आदर्श-साधुता' है।
आत्मा की परम दशा पर

साधुत्व का वेश-विचार पूर्वक पहना जाय।
आत्मा की मनोहर स्थिति में ही।
साधुत्व का आलोक दिखाई देता है।

साधुत्व यह असि-धारा व्रत है।
असि की तीव्र धार से जो कभी न बिंध सके,
वही साधुत्व को गौरव प्रदान करता है।
'साधुता' यह
जीवन को नव दीक्षा देने वाला गुलाबी रङ्ग है।
भावना को धार चढ़ाने वाली सुन्दर सान है।
जीवन को गुलाबी रङ्ग न दे सके—वह
'साधुता' सो शब्दों का मिथ्या आडम्बर है।
भावनाओं को उन्नत न बना सके तो
'साधुता' यह लोकरञ्जन का केवल दम्भी खेल है।

सच्ची साधुता
मनुष्य के मनुष्यत्व को खिलाने वाली
यह काश्मीर की हरीयाली भूमि है।
आत्म-सौन्दर्य के पिपासु 'लालों' का
यही मनोहर सुगन्ध-पूर्ण बगीचा है।
त्याग के चक्रवर्तियों का यह उच्च सिंहासन है।
इन्द्रों के ऐश्वर्य को भी लज्जित करे
ऐसा भव्य और सुन्दर यह जीवन में ही स्वर्ग है
यही आदर्श साधुत्व ही
जगत में पूजनीय गिना जाता है।

संसार के मोह को छोड़कर।
साधना के वस्त्र जो धारण करते है
नव दीक्षा के दिवस सिर के बालों का लोच करते हैं।
लोच कर-करके अपने आपको सुनाता है—

स्वपर हित साधन के अतिरिक्त
मेरे सिर पर कोई काम ही नहीं है''।
साधना के पथिक का यह प्रथम धर्म है,
संसार के छोड़ते ही
संसार की वासनाओं की भी तिलाञ्जली देते हैं।
दुनिया के दम्भी दिखावे और
जगत की जहरीली जञ्जालों को वे छोड़ते हैं।
और?
और 'करेमिभन्ते' का परम 'पच्चखखाण' लेते हैं।
अर्थात् जीवनभर 'सामायिक' में—
समभाव-पूर्वक रहने की प्रचण्ड प्रतिज्ञा करते हैं।
इस भीषण प्रतिज्ञा का
पल-पल 'जयणा' (जागृति) पूर्वक पालन करके
क्षण-क्षण मन, वचन और काया से
आत्म-विकास में एक-एक कदम आगे बढ़ाते है
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु क्षमा की जीवित मूर्ति हो,
उसके हृदय में कभी क्रोध का अंश भी न प्रकटे।
चारों ओर से शान्ति और सरलता टपके,
शान्ति, यद्यपि शीतल, गम्भीर और निस्तब्ध हो,
तथापि उतनी ही प्रबल व उदार हो।
क्षमा-भावना इतनी विशाल और दिव्य हो,
कि जिसके सन्मुख बाघ और बकरी
बिलाव और मूषक, सर्प और गरुड़
अपना जातीय स्वभाव छोड़कर आनन्द से क्रीड़ा करें
सरलता की धार
यद्यपि बिल्लौरी कांच के सदृश स्पष्ट हो,
तथापि तोड़ने पर वज्र के समान टूट सके नहीं।

ऐसी सरलता से
क्षमा के मंत्र पढ़कर
जगत् में से आत्मक्षोभ का रोग हरने वाला
महान धन्वतरि जो बने, और
जिसके द्वारा आत्मा की खोज करने की क्षुधा जागे,
वही आदर्श साधु।

समस्त जीवन जिसका
सम्पूर्ण 'सामायिक' मय हैं।
और जो प्रति-क्षण अपनी सामायिक की क्रिया में से
'समता' की शक्ति प्राप्त करता है।
क्रोध पर काबू करने की कला जानता है,
स्व-पर के कल्याण की खोज करता है।
मानसिक और वाचिक दोष हनकर
शून्यता में से चैतन्य में धूँसता जाता है।
सात्विकता की चाँदनी का तेज पीता है।
स्वातन्त्र्य, शोभा और सामर्थ्य को
अधिक से अधिक प्राप्त करके स्फुराता है।
आत्म-स्वराज्य का स्वाद चखता है,
एकाग्रता का ध्यान सीखता है।
क्षमा का वीर मंत्र पढ़ता है,
और आत्म-बल से
अपनी गुप्त शक्ति को विकसाकर
मोक्ष के दर्शन का रात्रि-दिन इच्छुक है।
सम्पूर्ण स्वालम्बन साधकर
आत्म संशोधन का मार्ग पकड़ कर
आत्म-विकास साधने के लिये जो उत्सुक रहता है
वही सच्चा 'सामायिक-मय' आदर्श साधु।

सोना, चांदी, हीरा, मणिक, मोती, और कङ्कर
जिसकी निस्पृही और निर्मोही आत्मा को
सब समान, पत्थर के तुल्य भासें।
क्योंकि, जिस सम्पत्ति से अनन्तकाल तक
आत्मा को तृप्ति नहीं हुई,
जिस मायावी समृद्धि को प्राप्त करते-करते सदैव
दीनता ही रहीं—
उसे 'जड़' पर—वस्तु मानकर फेंक दी।
उस पर भावत्यागी को मोह क्या?

सुन्दर अप्सरा या 'कुबजा' दोनों,
जिसकी दृष्टि में केवल काठ की पुतली है।
अग्नि या सर्प का स्पर्श स्वप्न में भी जैसे न करे,
उसी प्रकार भोग की वाञ्छा कभी न स्पर्शे।
यह तो कञ्चन और कामिनी के त्यागी
लोभ या मोह के शस्त्रों से विंधे नहीं।
सम्राट का सम्राट
और चक्रवर्ती का भी चक्रवर्ती,
ऐसी विपुल आत्म समृद्धि के खजाने का
स्वतंत्र मालिक,
वही आदर्श साधु।

जो अन्तःस्थल से—अन्दर से साधु बना है,
साधु वेश से साधु हृदय को महत् स्थान देवे।
साधुता का गुमान करने की जगह, जिसे
साधुता की भव्यता व पवित्रता के
निर्मल विचार ही हृदय में उमड़े।
ऊपर-ऊपर की 'एक्टिंग'—बाह्याडम्बर छोडकर
सत्य सत्य को समझने में जो प्रयत्नशील रहे।

भौतिक सुखों के लिये शक्ति का व्यय न करके
आत्मिक सुख की प्राप्ति में लगावे।
अपनी साधुता को सदैव 'आदर्श का रङ्ग देवे,
तथापि स्वयं ''आदर्श साधु है'' यह भूले।
और 'जनता के बीच में मैं पूज्यपात्र हूं'
इन विचारों की जहां अनुपस्थिति है,
वही आदर्श साधु।

जिसके पास केवल
चेतन भरी शान्ति का सन्देश है,
और आत्म-शान्ति का पान करके
सब को पान कराने की अभिलाषा जिसे,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु के रुधिर में
तेजका तन्दुरुस्त तत्त्व हो,
ताजी जवानी का जोश चमक रहा हो।
कर्त्तव्य-धर्म की भव्य उग्रता
जिसके सौम्य चेहरे के नीचे उबल रही हो।
धमाल की अपेक्षा जिसे शान्ति प्यारी,
आग की लपटों की अपेक्षा 'हिम' प्यारा है।
शुष्क शान्ति से चैतन्य प्रिय है,
'बदला लेने' की अपेक्षा प्रेम अधिक प्यारा है।
शान्ति, चैतन्य और प्रेम के पहाड़ पर
चारित्र्य की पताका फहराता है।
मुक्ति-मोक्ष के विषम मार्ग पर
अवल श्रद्धा, यही उनका आत्म-प्रिय सहचर है।
स्वावलंम्बन जिसका श्वास है।
और वैज्ञानिक की भांति जो

अपने विचारों, भावनाओं व कृत्यों को
निर्मलता का विश्लेषण क्षण-क्षण करता है,
और अन्तर के नाद को पहचान कर,
आत्म-निरीक्षण करते-करते ही
आत्म-दर्शन के प्रयत्न में ही
जिसका हिलना-चलना सभी एक ही
आत्मज्ञान की दृष्टि से होता है
वही आदर्श साधु।

जिसकी आंख में अगम्यवाद का तेज है,
स्याद्वाद का विशाल-ज्ञान है।
अनेक रङ्ग के रमणीय चित्र भरे हैं,
मीठी कल्पना का वहां सौन्दर्य
और भावना की ज्योति जगमगाती है।
ब्रह्मचर्य का पानी उछल रहा है,
निश्चय-बल की तेजस्वी किरणें फूटती हैं,
साधुता के सौम्य और शीतल फव्वारे उड़ते हैं,
भलमनसाई दर्शाती हुई भौहें ही
जीवन का आधा इतिहास बोलती हैं।
स्वाभिमान की अमीरी जिनके ओष्ट पर
शान्ति से बैठी है,
जिसकी शान्ति प्रभा-युक्त मुद्रा देखते ही,
काव्यमय लागणी का प्रवाह छूटता है,
और जिसके पीछे-पीछे सब घूमा करे
ऐसा 'कुछ' वैचित्र्य जिसमें भरा हो।
वही आदर्श साधु।

वैराग्य सजकर निर्माल्य व रोतल न बनकर
जो बहादुर योद्धा बना है।

मर्दानगी का खेल, खेलकर
सतत उद्यम के फल-स्वरूप ही मुक्ति को जो देखता है।
जिसके अखण्ड आत्म-विश्वास के द्वार पर
अनन्त शक्तियें आकर सांकल खटखटाती है।
और विश्व के समुज्वल इतिहास में,
प्रकट या अप्रकट रूप से सुन्दर हिस्सा जो देता है,
वही आदर्श साधु!

बाह्य क्रियाओं को क्रमशः छोड़कर
अन्दर के गर्भ को विद्युत-शक्ति से जगाता है।
पोथियों के स्थूल-शब्दों की अपेक्षा
भीतर का अर्थ समझने का कष्ट करता है।
बाहर के असरों से दूर होकर
आन्तरिक प्रेरणा से ही क्रिया में प्रवृत होता है,
और अनिश्चितता में से निकलकर
निश्चित 'ध्येय' की तरफ जीवन की नौका मोड़ता है,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु के जीवन का लक्ष्य
एक ही अन्तिम मोक्ष है।
'मुक्ति' यही उसकी सच्ची दौलत हैं।

पन्थ, वाद, गच्छ और सम्प्रदायें
या तुच्छता के इन सब प्रदर्शनों की
जञ्जीरें और दीवालें तोड़ कर जो
निरन्तर 'दिव्य' और दिव्यता के ही
खुले मैदान में विचरते हैं।
तलहटी के लौकिक मार्ग छोड़कर
चमकते स्वातन्त्रय गिरि—
शत्रुन्जय पर चढ़ने में जिसे खूब लज्जत है।

मोहमयी जाल की मछली न बनते हुए
ऊँचे आकाश में उड़ते हुए पक्षी के समान
पँख जिसने प्राप्त किये हैं,
वही आदर्श साधु।

जगत जिसको शान्ति का दूत कहता है,
विश्व-प्रेम का सन्देश जो भेजता है।
आत्म नाद को जो निर्बन्ध बहने दे,
और आत्म-तत्व का सच्चा परिचारक हो।
ऐसे सुन्दर पुरुष का प्रथम दर्शन ही
इतना शान्त और पवित्र प्रतीत हो, कि
चित्त की व्याकुलता शान्त हो जाय।
मन को मधुर समाधि प्राप्त हो,
और इस सुभागी-आत्मा के समक्ष बैठकर
अपने दोषों को सरलता-पूर्वक स्वीकार करके
दोषों से हलके हो जाने की स्वभावतः लहर आवे,
वही आदर्श साधु।

भवपूरता की भयंङ्कर भूख जिसे लगी है,
और अपूर्णता जिसे प्रतिदिन चुभती है।
काफी अवकाश निकालता है,
और इस शक्तिशाली आध्यात्मिक अवकाश में से
आत्मा को दिव्यता के दर्शन कराता है।
स्वाभाविक और कृत्रिम-जीवन के भेद को पहचान कर
किसी से भी बिन्धे बिना
अपने निश्चित लक्ष्य-बिन्दु की ओर
अदम्य उत्साह और अविराम गति से
जो आगे बढ़ता है,
वही आदर्श साधु।

पापके फल से नहीं,
किन्तु पाप-वृत्ति से ही मुक्ति याचता है।
दुरङ्गी दुनिया के शब्दों की अपेक्षा
आत्मा की आवाज को मान देकर चलता है।
अपने सबल विचारों में से ही
वातावरण और युग जो प्रकटाता है।
अपने सरल, श्रद्धामय और निष्पाप जीवन से ही
मानव-समाज को जीवन का सच्चा मर्म बताता है।
हृदयों का परिवर्तन कराता है,
और दीर्घ, सतत व तीव्र मनोमंथन के परिणाम-स्वरूप
जगत के सन्मुख जो अलौकिक तत्व की भेंट धरता है,
वही आदर्श साधु।

'जीवन' ही जिसकी परम-प्रिय पुस्तक है,
चारित्र्य ही उसकी पुस्तक का प्रथम 'अक्षर' है।
'मोक्ष' ही जिसकी पुस्तक का 'सम्पूर्ण'
और मानवता ही बस! जीवन की लिपि है
स्व-स्वरूप ध्यान की एकाग्रता
यही उनके जीवन का मोहक रङ्ग हैं,
ऐसे रंगीले जीवन को पुनः पुनः पढ़ना
यही जिसकी पवित्र गीता है,
वही आदर्श साधु।

बुलबुल पक्षी के समान,
आनन्द-हास्य जिसे वर चुका है।
वातावरण को खुशबूदार बना दे,
ऐसे पुण्य-जीवन का जहां परिमल है।
प्रेम, सत्य और सौन्दर्य को
अपना आनन्द में से जो स्फुराता है,

और पल्ल आनन्द भोगना जानता है।
चहरा सदैव हास्यमय और मधुर हो,
जिससे व्यग्रता का पाप पलायन करे।
पुण्य शाली की मुख-मुद्रा पर तो
निर्दोष हास्य ही झूले लेता हैं,
प्रत्येक झूले पर से ही वह
'सिद्धि' की वायु को विशेष स्पर्श करता है।
'हंसना और हंसाना' यही जिसका पवित्र कर्त्तव्य,
जो स्वयम् ऐसा आनन्द स्वरूप हो।
आनन्द, आनन्द और आनन्द
यही जिसका खाद्य और पेय पदार्थ हो।
जिसके ताजे खुशनुमा चेहरे में से
आनन्द का ही दिव्य सन्देश सुना जावे।
आत्मा की पवित्र लहरें वहीं से उठकर
सहस्त्रो के अन्तस्तल को पवित्र करे,
और मनुष्य के 'निजानन्द' को प्रकटाने के लिये
जिसका आनन्द-स्वरूप सदैव 'प्रेरणा' किया ही करे
वही आदर्श साधु

जो 'वज्रादपि कठोरणि, मृदुनी कुसुमादपि'।
वज्र से भी कठोर और कुसुम से भी कोमल हो।
कहाँ वज्रता दिखाना और
कहां कोमलता का मेघ बरसाना,
इसी 'समझ' का जो सच्चा कलाधर
वही आदर्श साधु।

बाहर के त्योंही भीतर के क्लेश मात्र पर
'जय' प्राप्त करने की जिसकी प्रबल इच्छा है।
'जयमार्ग' शोधने की सम्पूर्ण जिज्ञासा हैं,

जीवन-प्रवाह के अवलोकन में से
दिव्य 'स्याणपन' प्राप्त करने की चतुराई है।
और जो साधना को अर्पण किये हुए
अपने जीवन के गुण-दोष देखने की लगन में
जो खुद कर क्रूर होकर छाती मजबूत रखता है।
झूठी प्रतिष्ठा के 'होंवे' से डरता नहीं
और अपने में से अशक्ति के फोड़े ढूँढकर
उस पर क्रूरता से 'ऑपरेशन' करने की
जो दृढ़ता दिखाता हे
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु का जीवन
अनेक भव्य रहस्यों से भरपूर है।
उसमें अद्‌भुत तत्वों का महान संग्रह है।
उसका प्रतापी आत्म-सौन्दर्य अजेय है।
प्राण में Higher Consciousness
उच्च भान को स्थापन करता है।
उच्च भावना, उच्च स्वभाव और उत्तम ग्राहक शक्ति
जिसके आध्यात्मिक कौशल की जोड़ हैं
वही आदर्श साधु।

जैसी जिसकी अन्दर की दुनिया,
वैसी ही बाहर की दुनिया, वही आदर्श साधु।

अन्तर का बाग खिलाये बिना,
या भीतर की पूर्णता प्राप्त किये बिना
अथवा यह पूर्णता के पन्थ पर चले बिना
बाहर ही बबूलों में दौड़-धूप करके
जल्दी-जल्दी उपदेश देने में
अपनी रमणीयता को जो नष्ट नहीं करता है
वही आदर्श साधु।

अपने में स्वातन्त्र्य प्रकटाये बिना
अपने गुलाम जीवन के विचारों की जाल में
जगजीवों को फँसाकर
विपरीत मार्ग में खींचने के पाप से
सदा जो मुक्त रहता है
वही आदर्श साधु।

जिसका आवास प्राय, खुले स्थल में,
पहाडी हवा में, पहाड़ों में, एकान्त मे , हो!
पहाड़ों की प्रभुतामयी स्वतन्त्र वायु की
मिठास और ताज़गी पीकर
जिसकी आत्मा पहाड़ी-प्रचण्ड बने,
दिव्यता के दुष्काल न्वाले शहरों को छोड़कर
जहरीले वातावरण की दीवालों को कूद कर दूर जावें।
और एकान्त में, गांवड़ों में, जंगलों में
पहाड़ों तथा गुफाओं के सेवन में
अपना आत्म-कल्याण जो समझता है,
वही आदर्श साधु।

मौन.....एकान्त सृष्टि में से शान्ति और संयम का
बलवान आन्दोलन प्राप्त करता है
वही आदर्श साधु।

यानिशा सर्वं भूतानां, तस्या, जागृति सँयमी।
यस्या जागृति भूतानि, सा निशा पदयतो मुनेः।।
समस्त विश्व जब निद्रा-मग्न हो,
तब जो सम्पूर्ण जागृत है,
विश्व के मोहान्ध चक्षु
ठगाकर पीछे पांव भरते हों।
तब स्वानुभव के "व्यापक" भान और गहरे ज्ञान से

जो ऊँचा ही ऊँचा आगे चढ़ता हो।
कीर्ति या जाहिरात की परवाह बिना
शान्ति से अपना जीवन धर्म (Duty) बजावे।
सनातन सत्य के कल्याण-पथ की ओर
गुप्त-रीत्ये प्रस्थान कर रहा हो।
जीवन के निकट जाकर
आत्म-शुद्धि के पेट में प्रवेश कर जो
अहर्निश निजको-प्रचण्ड आवाज से प्रश्न करेः—
''मैं कौन? कहाँ से आया? कहाँ जाने वाला!
''कहाँ जाना चाहता हूँ? आज मैं कहाँ हूं?
'मैं अपने मार्ग पर हूं, या भूला हूं?
''जीवन का अर्थ क्या? विश्व में मेरा कर्त्तव्य क्या?
''मेरे जीवन को क्या शोभता है? और मैं कहां हूं?''
ऐसे प्रश्न कर पूछ कर अन्तर में गहरी दृष्टि फेंककर,
अन्तःकरण के स्वच्छ, निर्मल और पवित्र
बहते हुए जल में आनन्द-मस्त होकर जो
किल्लोल करे
वही आदर्श साधु।

आदर्श-साधु निरभिमान वृत्ति से अपने हृदय में समझता है,
मैं ज्ञान, सुख और शक्ति-स्वरूप हूं
एक हूं, शुद्ध हूं, बुद्ध हूं, अन्य द्रव्य से भिन्न हूं
मैं परमात्मा-स्वरूप हूं,
बस! परमात्मा ही परमात्मा हूं।

आदर्श साधु,
पण्डित दशा में से पीछे फिर कर
(Seeker) शोधक की दशा स्वीकारता है
सम्पूर्ण भान-पूर्वक प्रत्येक क्रिया का मूल देख कर

सर्व 'कार्य-कारण' भाव-पूर्वक शोधता है।
स्वाध्याय के समय को पूर्ण करके
पीछे ही उपदेश-पथ पर प्रयाण करता है।
अपने जीवन-वृक्ष में अमृत सींचे बगैर
विश्व का उद्धार करने जाने में
अपना ही 'आत्मघात' समझता है।
अतः अपने जीवन के ज़हरों को काट कर
पीछे ही औरों को उज्वल पथ पर प्रेरता है।
जगत् के कल्याण की धुन से पहले
निज के कल्याण का मार्ग निश्चित करता है।
और बोले हुए शब्दों की स्वाभाविकता,
पवित्रता व अमरता का अभ्यास करके
लोक-समूह को कला-पूर्वक
कल्याण-पथ पर जो खींच ले जाय,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु बोले थोड़ा
किन्तु बोले तब इतना सरस और भाव-मय
कि सुनने वाले के जीवन का झङ्कार करे,
वहां, दो घड़ी ठहर जाने का दिल हो,
मानों अमृतबिन्दु टपक रहे हैं—पी लें।
जीभ की बेहद मिटास से,
लौह-स्तम्भ भी पिंघल जायँ,
शब्द उसके मन में जञ्जाल हैं,
जीवन उसकी दृष्टि में आकर केन्द्रस्थ हो,
और आत्मा की अकथ भाषा आंखें बोलें,
तो भी मुख से शब्द बोलने की आवश्यकता हो
तो अनेक वाक्यों को एक ही वाक्य में पूर्ण करें,
प्रत्येक शब्द को तौल-तौलकर

हृदय गुफा में एकान्त-चिन्तन से शुद्ध करके प्रकट करे,
विचार, सीधे, स्पष्ट और सादे शब्दों में व्यक्त हों,
और इतने ताजे तन्दुरुस्त और स्वतंत्र हों
कि जो जगत् के महा पट पर रम्य उपवन सिरजे।
चारों ओर अजीब उर्वरा-शक्ति सञ्चरे,
और मरुभूमि में इसके विचारों की शक्ति से
हरी-हरी सौरभ-पूर्ण कुञ्जों की रचना हो।
इसके सौम्य, शान्त तथापि वीर्यवान आत्मा की आवाज
बिजली के चमकारे जैसी सीधी प्रवेश करके
श्रोता के अन्तर को पल्टा देवे।
और जो जीवन को गुलाबी रङ्गने में समर्थ है,
वही आदर्श साधु।

दुःख मात्र के सामने चैलेज फेंकने की
जिनमें लबालब मस्ती भरी है।
दुःख का विनाश दुःख को भेटने में ही देखता है।
उपसर्ग मात्र के सामने छाती निकाल कर चलने का
तन्दुरुस्त खून जिनमें खल खल बह रहा है।
'प्रगति' के ही उड़ने के प्रोग्राम रचता है,
निराशा के मुर्दे को पांव नीचे दाबकर
चारों दिशाओं से दैवी प्रेरणा के संदेश झेलता है,
और जिसके हृदय के तार सदा
आत्म-सौन्दर्य को भेटने के लिये झनझना रहे हैं
वही आदर्श साधु।

संकटों से जो भागता नहीं है,
किन्तु संकटों की शोध करता है,
मानसिक शक्ति के बल से,
संकटों पर आधिपत्य स्थापन करता है,

जगत् के विष को खूब शान्तिपूर्वक पी करके
हंसते चेहरे अमृत की ही वृष्टि करता है।
''शठं प्रति शाठयं कुर्यात्'' के स्यात्
''शठं प्रत्यपि सत्यं कुर्यात्'' का मुद्रालेख लेकर
कीचड़ फेंकने पर भी पुष्प-वृष्टि करता है।
गाली देने वाले को भी आशीर्वाद देता है।
और यह सब जीवन-कला से
अपकार का बदला उपकार से देकर
अपनी ''पूर्णता'' का दर्शन कराता है
वही आदर्श साधु।

सिर पर चाहे बम्ब, गोलों की बौछार हो रही हो
चारों दिशाओं में प्रलयकाल की आंधी जैसे तूफान
आते हुए दीखते हों।
तेजोलेश्या फेंकने वाले 'गोशाला' के
टीले हमले करते हों, तो भी अखण्ड शान्ति
सम्पूर्ण आत्मविश्वास और सहनशीलता,
अनंत वीर्य और 'मस्तराम' की बेपरवाई से
स्वाभाविक सब चीज़ों पर स्वामित्व जमा लेवे,
और अपने चारित्र तथा प्रबल व्यक्तित्व से ही
सकल विश्व को प्रभावित करके
अपने बनाये हुए खास बगीचे में
सोलह कलाओं से जो तप रहा है,
वही आदर्श साधु।

## ''यद् गृहस्थानाम् भूषणम् तत् साधूनां दूषणम्''

जो जो गृहस्थों के भूषण
उसमें ही खुद का दूषण समझता है।
दुनिया के पंचरंगी एशआराम
और आराम की इस भावना में
आत्मिक सुखकी होली समझ कर पीछा फिरता है।
समस्त जीवन, मन वचन और काया
सिर्फ साधना के लिये ही खर्चता है,
रागद्वेष या मोह माया के जाल
सदा के लिये दूर फेंक कर
आनन्द के धबकारे से अपना तेजस्वी वीर्य
आत्मा की शोध में—सिद्धि में जा सिंचता है
वही आदर्श साधु।

सियाला और उन्हाला।
जिसको कभी धूजा नहीं सकते,
संयम का 'ओवरकोट' पहिनने के बाद
जगत की कोई भी शक्ति उसको
तिल मात्र भी हिला सकती नहीं।
ऐसा आत्म-विश्वास धारण करकें
जो निर्माल्यतापूर्ण कोमलता में से निकल कर
योद्धा की सख्ताई सर्जते सीखा है।
जड़ का हठवाद फँककर
चैतन्य की स्फूर्ति प्राप्त की है।
शास्त्रों के स्थूल पन्ने सदा फिराने की अपेक्षा

जो अंतर के सूक्ष्म पड़ों को उकेलता
शाश्वत आराम, सत्य सुख, और सत्य प्रकाश
अंतर गुफ़ामें ही सदा ढूंढता है।
और जय की शोधवाले 'जैनत्व' का
वातावरण को पी जाने के लिये बहुत ही जो तत्पर है
वही आदर्श साधु।

असाधारण सामर्थ्यका जो पति
शील, शौर्य, साहस, और सेवाः
इन चारों दिशाओं में विहार करता है।
जीतने वाले का धर्म क्या! वह जानने का यत्न करे,
वही पढ़े, विचारे, और मनन करे!
मन और बुद्धि का, एकाकार साधके
स्थूल बनावों के पीछे आंतरिक सृष्टि शोधता है।
आध्यात्मिक भूमिकाओं के पोलाण में पैठकर
नीचे की नज़र भूमि की जो पहचान करे।
उसके गुह्य रहस्य समझे
'समझते समझते' बहते झरने की माफिक
नये नये दिव्य प्रदेश में मुसाफिरी करता है,
आगे, और आगे प्रयाण करता है,
और निरंतर विहार जिसका
''विहार'' ही प्रिय कार्य रहे
वही आदर्श साधु।

चौदह ब्रह्मांडों को डोलाने की शक्ति
अपने में अव्यक्त रूप से छीपी हुई देखे,
मनुष्यत्व के विधान में ही
धर्म का वृक्ष विकसता निरखे।
मनुष्यत्व जैसे जैसे खिले

वैसे वैसे धर्मतत्व का प्रचार होवे।
यह समझ कर जो।
बाह्य प्रवृति से हटकर आंतर प्रवृत्ति का विशेष विस्तार करे
वही आदर्श साधु।

संस्कृतिओं का सुन्दर और पवित्र मन्दिर
वही आदर्श साधु।

साधु-धर्म के पांच महाव्रतः
प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण,
अदत्तादान विरमण, मथुन विरमण,
और परिग्रह विरमण का जो सदैव व्रत पालता है
जिसके द्वारा प्रत्येक जीवधारी जीवको
जीने का अधिकार जो स्वीकारता है,
Live & let live जीओ और जिलाओ
उसकी निरंतर पोकार है।
प्रत्येक जीव के सुख और शान्ति के लिये
साधु खुद भी महा कष्ट उठाता है।
अहिंसा के लिये मृत्यु को भी आमंत्रण देता है,
कोई जीव छोटा-या बड़ा
उसके हाथ से हनन न हो, दूसरे से हना न जाय,
हनन होते को बचाना, यही आदर्श साधु का
पहला धर्म।

'सत्य' उसके जीवन की तेजस्वी प्रभा है।
मृत्यु के आखिर समय तक
सत्याग्रह वही उसका जीवन श्वास है।
असत्य के पथ पर चलने के पहिले विनाश की इच्छा करे,
सत्य, सत्य, और सत्य
इसके बिना मनुष्यत्व मैला होवे,

असत्य की छाया में भी खड़े रहने में
आत्मा की भ्रष्टता हुई मान कर
प्रायश्चित करना यह साधु का दूसरा धर्म।

दीये बिना के दान क़ो वस्तु को
अपना मानकर उठा लेना—
यह साधु की कल्पना में भी नहीं है,
देवे तो लेवे, नहीं तो भूखा ही रहे।
त्यागी को 'लेने' का भी क्या ममत्व होता है?
'देना देना''—अपनी सुगंध जीवन की
खुशबो सब को देनी
ऐसी मनोदशा वाले को
कभी स्वप्न में भी पराई चीज खींस लेने की
वा चुपकी से उठा लेने की वृत्ति न होती हो।
यही आदर्श साधु का तीसरा धर्म।

जिसका Noble soul प्रखर आत्मा
स्वभाव से ही ब्रह्मचर्य में रमता हो।
मन वचन काया से ब्रह्मचर्य की खूबियें
समझ कर जीवन को रंगता हो।
इन्द्रियों को संयम के चंदरवे नीचे वश.रखती है।
पदमणियों भी जिसके ब्रह्मचर्य से—
जिसकी चारित्र के चमकते तेज से
प्रभावित हो कर पीछे लौटती है!
मोह-सुन्दरी का फाट फाट उछलता यौवन
भी जिसके वीर्य को नमाने के लिये असमर्थ है।
ऐसा पुरुष साधु-धर्म के मूल से ही,
मैथुन से निवृत्त होता है,
यही आदर्श साधु का चौथा धर्म।

निस्पृहता की नमूनेदार मूर्ति को
कोई वस्तु पर स्पृहा न हो।
वहां वस्तु का संग्रह-या परिग्रह का भार
उसकी उड़ती आत्मा सहन कर सकती नहीं।
अपरिग्रहव्रत (Fullness)
जिसके आत्मा की अमीरी का दर्शन है,
यही आदर्श साधु का पांचवां धर्म।

यह पांच व्रत आदर्श साधु के
पुण्यशील आत्मा की पंखुडीये समान है।

आत्मा और परमात्मा की एकता
यह जिसके भाव-सामायिक का ध्येय,
बनी हुइ भूले पुनः होने न पावे
यह जिसके प्रतिक्रमण का प्रत्युत्तर,
वही आदर्श साधु।

निर्भयता की नीडर प्रतिमा
वही आदर्श साधु।

समता और निडरता जिसका नवकार मंत्र है।
और सिद्धि की साधना यह मंत्र का उद्देश्य
इसको निरंतर स्मरण में रख कर
इस मंत्र के भीतर छीपी हुई
प्रखर शक्ति को समझ कर
मृत सी आत्मा को संजीवनी देने वाला
इस नवकारमय के सतत् स्मरण से ही
प्रत्येक पद को जीवन में उतारने से
जो सब पाप-दुःख का विनाश देखे।
और लड़ाइ झगड़े या विषाद से

थके हुए आत्मा का यही एक मंगल
कल्याण-मंत्र समझता है
वही आदर्श साधु

अमुक शब्दों में ही 'मुक्ति' है,
और इन्हीं मन्त्राचरों में ही मोक्ष हैं,
ऐसी संकुचित भावना को छोड़कर
केवल शब्दों के 'भाव' पर से तोल निकालता है,
वही आदर्श साधु।

आध्यात्म के मंहगे पदार्थ को
स्पर्श करने की लायकात
शब्दों में नहीं, किन्तु भावों में है।
अक्षरों में नहीं, किन्तु 'अंतर' में है।
अमुक शब्द या संप्रदाय की छाप से ही
मोक्ष के परवाने मिल सकते हैं—
इस बात से जो इन्कार करता है
वही आदर्श साधु।

जिसकी पढ़ाई-पठन बाह्य और आंतर अभ्यास
जिगर को ताल देता हो।
प्रत्येक क्रिया या विचार को
यत्ना के रजोहरण से शुद्ध कर के
योग्य स्वरूप में रजू करने का मनोरथ हो।
और आध्यात्म के 'हृदय' को पाने के लिये जो
भारी से भारी मूल्य भरने को तैयार हो
वही आदर्श साधु।

जिसकी आध्यात्मिक छाया में से निकलता प्रकाश
संसार के सोते हुए आत्मा को
मधुर कंठ से जगाता है—चेताता है।
और व्यवहार के विषमय नशे को उतार के
सबको आत्मा के अमीरस पाता है।
संसारीओं की शुष्क भूमिका में
मधुर जीवन का सिंचन करे,
और चारों दिशाओं में असीम
शान्ति का साम्राज्य स्थापन करे
वही आदर्श साधु

आदर्श साधु का युद्ध
नैतिक सिद्धान्त के लिये चलता है।
मानवता को 'दैवत्य' देने के लिये
आकाश पाताल को वह बींधता है।
पृथ्वी पर से गगन मार्ग उड़ने के लिये
आत्मा का एरोप्लेन में वह विचरता है,
आत्मबोध और आत्म 'रमणता'
उसके एरोप्लेन की दो पंख है।
सादी सरल और उन्नत भावना
उसके विमान के दो ऐंजिन हैं।
श्रद्धा, रे अटल श्रद्धा मय ज्ञान उसका
ऐंजिन की तेजस्वी, 'सर्च लाइट' है।
दृष्टि और क्रियाशीलता
उसको आगे मार्ग दर्शाता है,
आत्मा की शक्ति उसके ऐंजिन का
धगधगता कोयला रूप है,
'बहेत्रीयाण' जल यह अग्नि की
'स्टीम' भाप रूप से आगे बढती है।

आनन्द और प्रकाश
उसके जीवन का खाना और पीना है।
अगाध मौन और विचारों के Vibrations
मोजे उसका 'वायरलेस' है।
पवित्रता और शुद्ध क्षात्र-स्वभाव का तेज
उसके विहार मार्ग के पाटे हैं।
स्वार्पण उसकी गति का स्टेशन है।
तृप्ति की तुंबी यह उसकी हेन्डबेग है।
जीवित लोही का धबकार यह
उसकी चाल की सौम्य सीटी है।
संयम की संपूर्ण ताबेदारी
यह उसका लाल झंडा है।
आशीर्वाद की अखंड पूजा
यह आदर्श साधुकी प्रगति सूचक वायु है।
मधुरता ही सिर्फ जिसका 'उपाश्रय' है।
समता और त्याग उसकी पुस्तकें हैं।
आत्मा के अनंत संस्कार
और प्रभुतामय प्रेम की भाषा,
आडंबर रहित स्पष्ट शब्द
और मौन भाषा की मूक अवाग् झंकार,
यह साधु के प्रिय सहचारी है।

जिसके चरण में सर्वस्व समर्पण करने का
आत्मा को स्वाभाविक नशा चढ़े, वही आदर्श साधु।

जिस निःस्पृहता पर जनवृंद वंदन करे
सर्व विरति-सर्वथा आत्मभोग पर जहां
अर्पण होने की उर्मिएँ उठे,
वही आदर्श साधु।

मानव-स्वभाव का गहरा अभ्यासी हो कर
मनुष्य के भीतर के रहस्य को जो पहचान ले,
वहीं आदर्श साधु।

आदर्श साधु के
संसर्ग से जीवन में ताजगी मिलती है।
उसकी प्रभाव की प्रबलता का अनुभव होते ही
अंतर में 'गुप्त' शक्ति की तरंगे तरंगित होती दीखे।
भीतर में सुशुप्त महाशक्ति जागे,
विग्रह के वायुमंडल में चढा हुआ मन शान्त होवे,
और निर्भयता की नींव रचाय!
जिसके शान्त मौन आगे
दुनिया के गिरिराज भी डोल सकें,
आंसू की पवित्र धारामें
शहन्शाहों की शहन्शाहत भी बह जावे।
इन आंसु के भीतर भी क्षमा और प्रेम है,
सौजन्य और मोहकता है।
उसके मौन में भी पत्थर की भेदने की शक्ति है,
पाताल को फोड़ने की प्रचंडता है,
वज्र-हृदय को हिलाने की प्रखरता है।
और स्नेह और दया से दुःखी जन पर
मानसिक आन्दोलन द्वारा
मलमपट्टे भी करने की कोमलता है।
जहां अनुकम्प और आंद्रता है
वहीं आदर्श साधु।

सामान्य जनसमूह के मान का मर्दन करे ऐसा
'कुछ' उसमें भरा है, तो भी क्या है यह—
जो 'अकथनीय' है
वही आदर्श साधु।

सजे हुवे शस्त्र का पानी भी उतार देवे,
ऐसे जिसके आन्तरिक शब्द है
वही आदर्श साधु।

तत्वज्ञान की बारीक से बारीक
बारीकियें शोध के, विचारे, मनन करे,
और जीवन में पचाने की कुशलता प्राप्त करे।
सदा समतोल वृत्ति में रह कर साधु
शान्ति और धैर्यपूर्वक ज्ञान को पचाता है।
विचारों में से निरंतर बल और चेतना पीता है,
भावनाओं में से रसिकता और संयम प्राप्त करता है।
और सरलता में से चारित्र घड़ कर,
चारित्र की रोशनी द्वारा
जगत को अंधकार में से प्रकार की ओर
अदृश्य, या दृश्य रीति से जो ले जाता है
वही आदर्श साधु।

जिसका मृदु और शीतल पुण्य-स्पर्श
सारा मनुष्य के "भीतर" को पलटा देवे।
पापीओं के दिल के दोष हर के
शुद्ध चारित्र की सुवास भरता है।
प्रेम की प्रति-ध्वनि से वातावरण में
प्रेम की ही प्रतिमा खडी करता है।
प्रत्येक प्रदेश को प्रेम से भिगो देवे,
व जीवन को रस से फलद्रुप बनाता है।
सुधा का सिंचन करके सुधाफल पकाता है।
और जिसके पाद-स्पर्श से ही कलेश के करुण-स्थान भी
सुख शांति के मनोहर धाम बनते है,
वही आदर्श साधु।

प्रवृत्ति में से 'निवृत्ति' प्राप्त करके।
एकांत में आत्मा को जो विकसित करे।
'भाव' सामायिक में बराबर स्थित रह कर
खुद की मोहक जीवन विशेष मोहमय बनाता है।
अपनी निवृति को 'प्रमाद' में न बेचते हुए
इस निहित को 'हजम' करना जो जानता है।
और फुरसद का सदुपयोग कर के
उस में से सुन्दर बालक-तेजस्वी तत्व को जन्म देता है।
फुरसद द्वारा स्व-स्वरूप में 'ध्यान' मग्न बनता है।
व्यवहार मात्र के 'पाखंड' पर
विजय प्राप्त करने की कला को वरता है,
और इस 'कला' द्वारा 'निश्चय' नय को जानने की
जिसमें संपूर्ण मस्ती जागी है
वही आदर्श साधु।

सत्य का जो परम पुजारी, शूरवीरों की अहिंसा का उपासक
ब्रह्मचारीओं का बहादुर सरदार
निस्परिग्रहता का जीवित आदर्श
बालक के जैसी सुन्दर सरलता धारण करता है।
और निर्दोष प्रेम का तो वह फूआरा!
क्षमा का विशाल सरोवर, और आदर्शों का आदर्शः
जिसकी प्रत्येक क्रिया में से
निखालसता और निर्दोषता का ही
दर्शन होता है
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु ने जीवन की ब्रेक (Brake) प्राप्त की है।
और उसका त्याग रोज उन्नत सीढ़ी पर चढता है,
चढते और दौड़ते रास्ता भूले तो 'ब्रेक' दाबता है,

और 'भान' पूर्वक पीछा फिर कर
'मिच्छामिदुक्कडं' याच कर
पुनः सच्चे मार्ग में प्रयाण करे
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु की आंखें
शुभदर्शी (Optimistic) होने का दावा करती है,
इससे खुद के जीवन कर्तव्य बिना
दूसरे के दोष देखने को
जो बहुत कम दरकार रखता है-
यही पवित्र मूर्ति
वही आदर्श साधु।

'वृत मात्र' पर जिसने
'जीत' प्राप्त करने का निश्चय किया है।
तो भी जो रोती सूरत जैसा न बनके
'हसते सिंह' जैसा बन रहा है।
भक्ति योग का वन बींध के
कर्मयोग के बगीचे की सुगंधी सूंघता सूंघता जो
ज्ञानयोग के मेरु पर खुली चक्ष से
छलांगे भर रहा है—
भरने का मनोरथ रचता है
वही आदर्श साधु।

जिसकी अहिंसा-भरी दृष्टि जंगल में भी मंगल करे।
जहर का अमृत बनावे—दुश्मन का दोस्त बना दे।
और विष झरते फणीधर के शिर पर
प्रेमामृत प्रगटावे
वही आदर्श साधु।

'त्याग देव' का ही जो मंदिर,
देव और पुजारी दोनों खुद ही होवेः
प्रकृति, वेश, भावना और जीवन,
शब्द और सब परमाणुओं में से त्याग झरता हो।
यह त्याग भीतर खदबदाटी
या आत्म-जागृति का स्वाभाविक परिणाम होवे।
तो भी 'मैं त्यागी हूं' वह विचार मात्र से जो दूर हो!
केवल चेहरे पर से ही
त्याग का अनुपम इतिहास पढा जाता हो।
और इस इतिहास के अक्षर
पवित्र शक्ति की जैसे देखने वाले को खींचे,
आंख के इशारे से हृदय में त्याग-भाव का सिंचन करे।
शुष्क आत्मा में रसिकता और सभरता भरे।
शब्दों के आंडबर बिना, चेहरे के सुन्दर भाव से ही
दूसरे के जीवन को जो सुन्दर-त्यागी बनावे।
और जिसकी हाजरी में जीवन का अभिमान और दंभ
अपने आप गल जाय—
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु मिट्टी में से महादेव बनावे।
पत्थर में से प्रभु प्रगटावे।
मृत्यु को मारने की विद्या शिखावे,
और वासना मात्र को विनाश करके मोक्ष का पंथ बताता है।

जो अमीरदिली आगे हृदय स्वभावतः वंदना झुकाता है।
जल-तरंगों के माफिक सब को हर्ष-नृत्य कराता है।
दयापात्र नहीं, किन्तु ईर्षा के पात्र बनता है,
इर्षालु को जो मीठास से ही मारता है।
इस मार में भी मधुरता टपकती हो,

और चाहने वाले में प्रभुता है
वही आदर्श साधु।

अपनी अन्दर की अज्ञानता का जिसे भान है।
और सत्य तत्व की बारीक परीक्षा है।
प्रति समय जो 'नया' बन रहा है, और
जीवन-महत्ता के विचार में चकचूर रहता है
वह आदर्श साधु।

आशा का अखूट खजाना होते हुए भी
जो अतृप्ति के दैत्य का विनाश कर सकता है।
सिद्धिओं को वरने के लिये संटकों की पथारी में से भी
स्वर्ग के सुख कुशलता से जो बीन सकता है।
त्रास उत्पन्न करे वैसी विषम स्थिति में भी
जो मोज से अपना 'सच्चिदानन्द' स्वरूप की
संपूर्ण रक्षा करता है
वही आदर्श साधु।

उंचे उड़ने के पहले 'उंडाण' में जो उतरता है।
भक्त की पास पूजा कराने के बदले
प्रहार में ही अपनी प्रगति देखता है।
ममत्व के राक्षस को मार करके
पुरुषार्थ के वेग को उतावला बनाता है।
और समकीत के मार्ग पर मुडते हुए
अनेक प्रकार के वज्रमय बख्तर
सज्ज के जो दौड़ रहा है
वही आदर्श साधु

अपनी प्रकृति के पाये में से ही
वचनगुप्ति की पूरणी करके
जीवन का मनोहर बिल्डिंग जिसने बनाया हैं
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु की मानवता में से
तेजो-मय चपलता टपक रही है।
स्वतंत्रता और स्वाभाविकता का दर्शन होता है।
कुदरत के साम्राज्य में कुदरती रीत से रह कर
'मस्त' की माफिक खडखड जो हास्य करता है।
आनन्द के धक्के से जीवन-खेल
निर्दोष भाव से जो खेलता है।
हर्ष की खुमारी में नाचते हुए उसने चक्षु
सरलता और मिठाश की ठंडक देता है।
आत्मा की उन्नत स्थिति पर पहुंचते जो
प्रत्येक चीज, भाव, भावना और कल्पना में से
निर्लेप-रूप से रस लूंटता है,
वही आदर्श साधु।

साधना के पथ पर दौड़ते हुए जो
अपने 'स्थान' पर से डोलायमान होता नहीं,
अथवा अपने दिव्य-उद्यान का मजा
लोक के तराजू पर बेचता नहीं।
अपने उज्वल ज्ञान को लोक और 'लोकमत' के स्मरण में
फीका कर के नीचे गिरते देख सकता नहीं।
लोगों के तरफ की प्रशंसा में सड़ कर
सत्य ज्ञान को कभी जो छिपाता नहीं।
यह तो जीवन की प्रत्येक पल में
– अपने- खुद के 'भीतर' के आवाज प्रति

संपूर्ण 'वफादारी' बताने को चूकता नहीं
वही आदर्श साधु।

अपने जीवन कृत्यों की 'प्रमाणिक' नोंध रख कर
ग्राह्य और अग्राह्य तत्वों का विवेक जो समझता है।
भूलों को 'भूल' रूप से स्वीकार ने की 'सच्चाई' धराता है।
और अहर्निश साधना का जीवन-मंत्र जपते जपते
परायी सहाय और लौकिक मौज-मजाकी
तिलांजलि देकर मस्त माफिक रहे
वही आदर्श साधु।

जिनकी आध्यात्मिक 'बंसी' से आकर्षित हो कर,
चाहे जिस धर्म के कहलाते 'नास्तिक' भी
प्रेम से भीजी हुई आंख से दर्शन झेलने को आता है।
पुण्य और पाप की बेड़ियें बजाने के स्थान
जो सदा विजयी का धर्म क्या? यह समझाता है।
और उसमें ही अपने 'जययुक्त' जीवन को सार्थक मानता है।
किसी के भी पास अपनी।
पवित्रता और साधुता के बिगुल फूंकने से
अपने 'उत्कृष्ट मंगल' मार्ग पर चलते
आनंद की लहर से प्रमाणिक जीवन जीता है,
जी कर के, जो जीवन में से अपने आप सुगन्ध फैलाता है,
ऐसे सच्चे जो हृदय-मार्गी साधु बनता है,
वही आदर्श साधु।

कला के भूखे आत्मा को जिसके जीवन-तट पर बैठे के
मीठ्ठी मिजमानी उड़ाने का शुभ अवसर मिले।
कृत्रिमता की नकलीयत में भूले हुए को—
संसार के संताप से दग्ध और जले हुए को
जिस नंदनवन के पास आकर के

शान्ति से विराम करने का स्वाभाविक दिल हो जावे।
इस जंगम-तीर्थ के दर्शन करने की किसी को भी
स्वाभाविक मन में उत्कृष्ट इच्छा जागृत होवे।
मानव-हृदय के उच्च मनोरथ,
आदर्श और महत्वाकांक्षा का जहां पोषण होवे।
और चाहे जैसा गर्विष्ट इन्द्रभूत्यादि के गुमानी दिल में से भी
'स्वयंभू' श्रद्धा या भक्ति के फव्वारे फूटे,
वही आदर्श साधु।

दुनियां के दुःखी दर्दियों का
ऑनररी मानसिक डॉक्टर,
वही आदर्श साधु।

बिना बूझे मन के ताप जिसको देखते सब शान्त हो जावे;
आत्मा के, बिना खीले संस्कार
आदर्श साधु को सेवते ही खील उठे।
निरस हृदयों में भी पुष्पों की शय्या बीछावे।
उकलती दुनिया के शिर पर
सुवासित जीवन की शीतलता बरसावे।
और अपनी स्वतंत्र नासीका तैयार कर के
नन्दनवन की वायु में से जो सुगन्ध लूटे।
और लेशमात्र भी आवेश या लागणी से न दोराते हुवे
ठण्डे कलेजे से वीरोचित उदार भावना से
प्रत्येक पक्ष को शान्ति से विचारे—
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु की तपश्चर्या,
उसकी बिखरी हुई शक्ति को एकत्रित करती है।
आत्म-शक्ति का पुँज जमाती है,
प्रकृति के सब हथियार, मन शरीर प्राण और बुद्धि

ये सब आत्मा के सिद्धान्त को स्वीकारते है,
और निश्चय रूप से समझते हैं कि—
"तप से मन की समृद्धि बढने न पावे तो
तप यह केवल ढोंग मात्र ही है"।
उसकी तपश्चर्या विविध कर्म के बल को क्षय करती है।
मूल प्रकृति की तीक्ष्णता काटती है।
स्वभाव को रेशम जैसा मुलायम और
पुष्प सम सुगन्धी बनाता है।
आत्मा को आनन्द मय कोमलता अर्पता है।
और मक्खन जैसी मुलायम बनी हुई जीबान में से
जिसकी तपश्चर्या मधुर वचन ही निकालती है,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु के 'धर्म' का अर्थ
'गुणस्थान-क्रमारोहण' होवे।
आत्मा का ऊर्ध्व-गति जिनमें से देख सके।
हृदय के गुणों का विकास जिनका 'नूर' बढाता हो।
चित्त के व्यापार समतोल-वृत्ति रख सकते हो।
और सम्यक्-ज्ञान, दर्शन और चारित्र का
निरन्तर स्मरण रख कर उस में से जो
दिव्य जीवन का आविष्कार करे—
वही आदर्श साधु।

संसार से विरक्ति लेकर
द्रव्य और भाव से सम्पूर्ण निवृत्ति लेकर
संसार के विकारों से भी 'पर' होकर,
अखण्ड 'कर्मयोगी' वत् जी
नवीन 'अवतार' और नवीन 'जीवन' का घाट घड़ता है।
आत्मा की शोध से अविश्रान्त रूप से गति करे,

निवृत्ति-मार्ग से 'पुरुषार्थ' की प्रवृति साध कर
दिव्यता व स्वतंत्रता को वरने का उत्सुक जो
वही आदर्श साधु।

जो ज्ञान-मार्ग के तेजीले पथ पर
जिंदगी का शान्त और निराडम्बरी आश्रम स्थापे,
संसार के सब प्रभाव से दूर रह कर
सब प्रभाव को ही अपने में से जन्म देवे।
उसकी 'व्यापक' ज्ञान-दृष्टि में से फूटते
किरण से अनेक कल्याण-बाग खिलते रहे,
दोस्ती या दुश्मनी के कीचड से हाथ धोकर
समभाव-पूर्ण नजर से विश्व के
सब मनुष्य और तिर्यंच के साथ
समान व्यवहार रख सकता है
वही आदर्श साधु।

अंतर के सोये हुवे तत्व को जो हिलाकर जगाता है,
जगाने को दौड़ती क्रिया का बारीक अवलोकन करता है,
जगाने वाला और जागने वाला-उभय का
एकत्व समझ कर प्रेरणा किया ही करे, पिया ही करे।
आप अपना ही चौकीदार बनकर
खुद के विचार और वर्तन पर सम्पूर्म काबू प्राप्त करता है।
और जो खुद ही खुद का बादशाह और
खुद को रैयत समझ कर आत्म-प्रवेश पर शान्ति से
चक्रवर्ती पद भोगता है—
वही आदर्श साधु।

अग्रमत बन के दशों दिशा में से जो अक्षय बना है।
पढने से ज्यादा विचारने में विशेषता समझता है।
'शिक्षा वचन' देने की अपेक्षा

संस्कार जगाने में सिद्धि देखता है।
और बोलने से मौन में शक्ति के शस्त्र भरे हुवे देखता है
वही आदर्श साधु।

मानवता के मोजे जिसकी साधुता को
सोनेरी रंग से शोभा देवे,
समता की लहरिएं जिसके 'मुखचन्द' पर छाकर
जीवन की गहराई और भव्यता का सुन्दर ख्याल देवे,
और मुक्ति के पिपासुओं का जो मजबूत
'तीरण तारण' सफरी जहाज है,
ऐसा देखते ही निर्णय होवे, वही आदर्श साधु।

आत्म-स्वमान की गौरवमूर्ति, दुनिया की
कीर्ति या अपमान के टुकड़े दुनियां पर फेंक देवे।
पदवीएं जिसको भार रूप भासे,
गुरु आगे उनकी 'अनुकुल' उपसर्ग प्रतीत होवे।
दरिये जैसा दिलावर दिल में से ज्ञानकी सुवास बीछा कर
अपने मनोमन्दिर को पवित्र करे।
सब दुनियां सुवासित बने वैसी सुगंध भरता है।
शुष्क हृदय में 'चैतन्य' उतरावे,
फिजूल धामधूम जिनकी पसंद नहीं।
इसमें 'मान' में फुलावे नहीं, कि
'अपमान' में कुमलावे नहीं।
ऐसा 'आनन्दघन' जीवन तो बीतावे
वही आदर्श साधु।

संसार के मोह, अज्ञान, अंधकार निकाल कर जो,
अपना मधुर शीतल ज्ञान-वारी जगत पर बरसाता है।
रस से तरातर कर के निर्बलों को भी प्राण के प्रसाद देवे
और विश्वव्यापी स्नेह के 'झूले' पर जो

सारी दुनिया को झुलाता है—
वही आदर्श साधु।

अनुभव की एरण पर घड़ाया हुआ
यह महान् योद्धा है।
दुनियाँ की कठोर ठोकरें खाते हुए भी
उन ठोकरों की 'स्मृति ज़हर' दूर किये हैं।
आंखों के दृष्टि-पात में जो मनुष्य का अंतर को नाप लेता है
विचार और भावना से ही पात्रता को पिछानता है।
ज्ञान और अज्ञान के स्पष्ट भेद समझता है।
कर्म और उसके फल कां 'जागृत' भान रखता है।
वीतराग के मार्ग की छोटी और बड़ी
माहिती के लिये कोशिश करे,
और अपनी हाजरी से बने हुए शुभ कार्यों में
जो खुद को 'निमित्त मात्र' ही समझता है।
वृत्ति मात्र को क्षणिक तरंग मान के
वृत्तिओं की तरफ हास्य करता है।
और मिथ्याभिमान की काली बादलिओं को
अपने जीवन-प्रदेश में आती अटकाने के लिये
जो सतत् चौकी कर सकता है—.
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु,
जीवन की प्रत्येक पल में से सौन्दर्य शोधता है।
प्रत्येक स्थिति में से पवित्रता का निचोड़ लाता है।
अहर्निश मानसिक व्यायाम करके
उसमें से धर्म का अखण्ड प्रवाह बहावे।
और जिसके पातरे में मनुष्यत्व के विकास की
अनेक गुप्त चाबियें पड़ी हो!
वही आदर्श साधु।

जिनको अपना वीर्य निष्फल और—
निष्प्रयोजन तुच्छ युद्ध पीछे खर्चना पोसाता नहीं,
भीतर के 'कुरुक्षेत्र' पर विजय प्राप्त करने को
जिन बाहोश सैनिक को झूझते थकान लगे नहीं,
अपनी सहाय के लिये जो
किसी बाहिरी तत्व की आशा में ठगाता नहीं,
किन्तु आदर्श साधु
भीतर के देवत्व पर अवलंबित रहता है।
अपनें को ही शान्ति का निवास-स्थान मान के
खुद को और दुनिया को गति-गरमी देवे।
और जो अपने आत्मीय उच्च शौक को विकसित करते
संसार के अनेक तुच्छ देखावों के सामने
बंड जगा करके स्वतंत्रता से बिचरता है।
स्वतंत्र विचार कर जो जीवन में सदा नया जल लाता है,
जीवन के प्रत्येक श्वास की अपनी
अद्‌भुत् जीवन-कला से सुगंधमय बनाता है।
भीतर की गड़बड़ को सदा शांति का ही संदेश देता है।
और अपने दोषमय जीवन को शुद्ध करने वाली
गर्मी जिनकी ठण्डी आंखों में से स्फुरती दीखे—
यही लोखण्डी इच्छा-शक्ति का समुद्र-आदर्श साधु
प्रत्येक छालक में महान् परिवर्तन कर सकता है।

एकान्त-दृष्टि छोड़ के
अनेकान्त दृष्टि से—स्याद्वाद की शैली से जो
प्रत्येक वस्तु के गुण दोष धैर्यपूर्वक तपासता है।
विवेक के चश्मे से वह वस्तु जो बराबर देखता है,
और 'निदिध्यासन' में अपनी जिंदगी के
अमूल्य समय को जो खर्चता है वही आदर्श साधु।
ऐसे आदर्श साधु ज्ञान की गंभीर गीता है,

अकल ऐश्वर्य, और प्रेम की परिसीमा है,
जागृति की ज्वाला जैसा उसका 'जीवन'
और 'चेतना' की बाफ जैसे परमाणुः
प्रत्येक पद पर कर्तव्य-बोध देता है,
धर्मसूत्रों के सच्चे रहस्य की भेट धरता है,
और निष्काम कर्मकी लगन लगावे।
महत्ता के संस्कारी उपदेश की धुन जगावे।
'ज्ञान' और 'क्रिया' का समन्वय कर के
भीतर की चेतन-चिनगारी से जो
अनाथ हृदय को सनाथ बनाकर सजीवन करता है।
मूर्छित अंतःकरण को जगाता है,
वही आदर्श साधु।

जिसको मधुर आत्मीय बंसुरी
जगत में अदभुत संगीत का स्रोत बहावे।
बन्द हुए हृदय के द्वारों को खुलावे।
सोते हुए आत्मा को जगाता है।
और मानव-जन्म का सच्चा आशय और कर्तव्य समझ कर
आत्मिक सुक्ष्म भवनों का संशोधन करे।
और तत्वज्ञान की 'खाख' पचाने के लिये जो,
आत्मा के मल और बुद्धि की विभ्रमता को
हटाने वाला जुलाब ले सकता है,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु अपना स्फटिक सम उज्वल जीवन
धर्म श्रोताओं के लिये सदैव
दर्पण के माफ़िक खुला रखता है।
अपने जीवन की निर्मलता और विचारों को
विशुद्धिता देखने का

सब कोई के अधिकार मंजूर रखता है।
और जीवन जैसा हो, वैसे ही स्वरूप में
बिना आडंबर रजु करने की प्रमाणिकता दर्शाता है।
क्लेश कंकास, बहेम और शंका की बेडी तोड़ता है।
और अपने भीतर से ही
स्वशक्ति से ही 'स्वातंत्र्य' को शोध के
अपने में प्रकटाता है, प्राप्त करता है।
'स्वातंत्र्य' को अपने में समा करकें,
जीवित मुक्ति जो साधता है।
भीतर की गुलामी के कंटक दूर कर के
'स्वातंत्र्य' के गुलाब के पौंदे उछेरता है।
गुलाब को उछेरते जो
गुलाब के कंटक प्रेम से सहन करता है,
'बिना कंटक का गुलाब होता नहीं,
और बिना दुःख स्वातंत्र्य होवे नहीं''।
यह जिनकी मज़बूत मान्यता है।
'कंटक से गमरायगा, वह गुलाब की सूँघ सकता नहीं,
दुःखों से जो भागेगा, वह मुक्ति को प्राप्त कर सकेगा नहीं'
इस सिद्धान्त पर जो गुलाब को भेट के लिये दौड़ता है।
और होजरी की सब शक्ति से
'स्वातंत्र्य' को अपने में पचाना जानता है,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु में, काजल की कोटड़ी में घुस करके
श्वेत मुख पीछी फिरने का जीवित कौशल है।
अग्नि की ज्वलंत भट्टी में जो वासना की आहूति अर्पता है,
और अलख की शोध के लिये
अपने प्रत्येक आत्म-प्रदेश को अलख बनाता है
वही आदर्श साधु!

सन्यास का ज़ामा पहिन कर
जो-मन से, अंतर से सन्यासी बने।
वेष या शिर मुण्डन की क्रिया। ही बस नहीं
किन्तु 'अलख' हाथ करने के लिये
सर्व जीवन-प्रवाह से, विकार से, जो 'अलख' हो जावे।
दुनियाँ के विपँवाद से खुद को उठा कर
अपने चित्त को आंतराभिमुख बनावे।
कफनी या भेख जिनके जीवन से भिन्न नहीं है।
प्रत्येक भावना में भेख की प्रतिछाया गिरती हो।
और वैराग्य जिसके प्रत्येक रोमांच में है,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु के आवागमन में, प्रभुता की प्रतिध्वनि होती है
हृदय में भूतकाल की पुनित स्मृति,
वर्तमान की ज्वलंत प्रभा,
और भविष्य की मोहक कल्पना उठती है।

सम्यकत्व के ऊँचे शिखर पर जो चढ़ रहा है,
भीतर के देव की अगम्य लिपि निरंतर पढ़ता है,
ज्ञान की पवित्रता समझ कर संकटों को बिंधनेवाला
क्षात्र-नुर जिसमें झलक रहा है।
रसास्वाद रहित खानपान को स्वीकारता है।
विशुद्ध और बिलकुल सादे जीवन के स्वरूप में
यह 'निजानंदी' के प्राण डोलते होवे।
प्रत्येक जीव में अपना दर्शन करता है।
और "शिवमस्तु सर्व जगतः"
सब जगत का कल्याण होवे—
ऐसी अहर्निश भावना भावे—वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु आत्म प्रशंसा की इच्छा मात्र करता नहीं
कल्पना में भी परनिन्दा का वगदे को संग्रह करता नहीं
आगे-पीछे की तुच्छ प्रवृत्ति में कान धरता नहीं
और विचार में गहरी दृष्टि का समावेश करता है।
ऐसे पुरुष के जीवन की यात्रा में जीने का
देवों को भी आकर्षण होवे—वही आदर्श साधु।

'एक को नमावे, वह सब को नमाता है'
आदर्श साधु का यह जपमंत्र है।
एक ही, आत्मा को जीतने से
समग्र सृष्टि को वह हरा सकता है।
तपश्चर्या करके ही फल की कमाई करता है।

भव्य स्वप्न सेवन करना और साक्षात्कार करना,
यह उसकी मंगल प्रवृत्ति है।
शान्ति की माया वह चाहता नहीं,
या मृत्यु-सूचक शान्ति को स्पर्श करता नहीं!
युद्ध-आत्मयुद्ध और विजय
और उस विजय के फल—स्वरूप चिरकाल की शान्ति
ऐसी शान्ति का जो परम पुजारी है—वही आदर्श साधु।

पामरता और तुच्छता के सामने
आदर्श साधु का जीवन लाल दीपक के समान है।

जिसकी आत्मा का उल्लास
अपने हृदय को गुदगुदी करके हँसाता हो,
अपने अनुभव और जीवन के चालू कार्य के बीच भेद न हो
उपदेश और जीवन के बीच अन्तर नहीं।
इससे विचार जैसा बर्तन होता है,
और जैसे बाहर के दर्शन, वैसे ही
भीतर के उज्जवल देव हो—वही आदर्श साधु।

शौर्य का खड्ग खेल सके वैसे सिद्धान्त,
और सिद्धान्त के पीछे जीवन जिसका अर्पण है।
कर्तव्य मार्ग पर प्रचण्ड उदारता व तीव्रता धारण कर के
जो कर्तव्य की सफलता प्राप्त करता है—वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु, जीवन को नव-दीक्षा ही देनेवाले
शास्त्रों के प्रमाण स्वीकारता है।
आत्मा की शान्ति के वेष में आत्मकलह उपजाता नहीं,
'दीक्षा' शब्द का अंतर रहस्य तपासता है।
प्रत्येक शब्द के ऊंडे मर्म समझने का प्रयास करता है
सिद्धान्त के गर्भ में से सत्व का निचोड़ निकालता है।
और शब्दों के बाह्य रूप-रंग पर से
तत्व-निर्णय कर डालने का लड़कपन
तुच्छता के भयँकर मिथ्यात्व को निकालता है।
द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के रंग को पहिचानता है,
और अंशमात्र भी तामस के तवे में बिना तपे
कलह कुसंप का दावान्ल बिना प्रगटाये,
प्रगटे हुए को भी बुझाकर
जो अपनी शान्ति सुचारित जीवन धर्म बजाता है,
जीवन को सिर्फ गति ही देता है—दिव्य प्रेरणा पाता है,
अन्धकार में से निकल कर प्रकाश में खींचता है,
यही जिसका धर्म, धर्म के सूत्र
और यही जिसकी धार्मिक क्रिया
वही आदर्श साधु।

जहां धर्म-शुद्ध धर्म को देखता-उपदेश होवे
वहां आदि, मध्य या अंत में क्लेश होता नहीं।
ऐसा समझ के जो 'अपने' को सच्ची दीक्षा देवें
वही आदर्श साधु।

जिसकी विद्वता तर्कवाद में बेडोल बनती नहीं,
लोगों को खुश करने के लिये नर्तक को कोटिमें
उतरती नहीं।
सत्याभास या धर्माभास में
अपने धर्म स्वरूप को नाश होने देता नहीं,
जगत् और रुढ़ि नचावे वैसा नाचता नहीं,
और जो अपनी उच्च भूमिका पर खडा रह के
अपनी 'भूमि स्थान' का गौरव समझकर
अपने 'मध्य-बिन्दु' से लेशमात्र भी चलीत होता नहीं
वज्र की दिवाल जैसे मजबूत रह के
दुनिया के विकार-घावों को कुंठित कर देवे—वही आदर्श साधु

जिसका "चैतन्य" कभी सोता नहीं,
वही आदर्श साधु।

दाव-पेंच से या बुद्धिवाद के भार से
धैर्म के मिथ्या वकवाद से या ऊपर ऊपर के आडम्बर से
जनता में 'पूज्य' बनने के तोफान के स्थान
भीतर के वृक्ष को विकसित करने के लिये
आदर्श साधु सदा प्रयाण करे,
जीवन की युद्ध कला में शक्ति प्राप्त करे,
धीरज और विवेक को ऐसे विकसित करे,
कि किसी से भी चलित न हो सकें।
और जिसके तप विद्या और चरित्र की जोड़
नम्रता से पूर्ण ज्ञानदृष्टि में मिल जावे,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु धर्म का उपदेश ही 'सदा' करने के स्थान
अपना जीवन ही धर्ममय बनावे।
जिसका जीवन ही धर्म की भाषा वदता हो

जीवन ही नीति का अखण्ड प्रवाह हो।
शब्दों के चौरस टुकड़े धर्म के पवित्र नाम नीचे
सस्ते बता के जगत् में
नास्तिकवाद का प्रचार करने के स्थान
जिस में शब्दों की पवित्रता और
धर्मसूत्रों का मूल्य आंकने की
संपूर्ण सद्बुद्धि भरी हो—वही आदर्श साधु।

जिस संत पुरुष के चारित्र-श्रवण से
'श्रावक' का मन बलवान बने।
जीवन आशामय और तेजस्वी हो।
सबल और प्रभावशील आंदोलन आसपास लपट जावे
मानव-धर्म के सच्चे उपासक होने की भक्ति जागे,
और जिसकी साधना की ज्योत
खुदको और पर को उज्वल सत्य के प्रदेश में ले जावे,
वही आदर्श साधु।

जिसका ज्ञान
अभिमान के बादल पर उड़ता नहीं,
या वाद-विवाद की गटर में सड़ता नहीं
मात्र मगज को विद्या से भरता नहीं,
किन्तु अपनी आंखें ज्ञानमय-प्रकाशमय बनाता है
हृदय व बर्तन में ज्ञान की सुवासना का प्रचार करता है

अप्रसिद्धि में ही गौरव मानता है।
और दुःख से तप-तप के शुद्ध होने की प्रयास करता है।
'शुद्धाशय' की राह पर धीमे किन्तु
अविश्रान्त रूप से श्रम करता है।
भूले हुवे मार्ग का 'मिथ्या दुष्कृत' लेकर
आदर्श साधुत्व के द्वार में प्रवेशता है
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु
आत्म-सुधारना के लिये ही शास्त्र पढ़ता है।
'परोपकाराय सतां विभूतयः'
परोपकार करने के लिये ही भीतर की कला सीखता है
नयन-कमल किसी अगम्य के चिंतन में
नीचे नम रहे हों।
और मृत्यु की चिन्ता छोड़ कर जो
धर्म और जीवन के प्रत्येक ताने बाने में बुना रहे।

जगत में सहानुभूति की शोध में रखड़ने से
अपनी मजबूताई जो सिद्ध करता है।
सहानुभूति लेने की अपेक्षा देने में ही आनन्द माने।
और सच्चा कर्त्तव्य बुरे अन्त में समाता नहीं,
उच्च विचार खोटे कर्त्तव्य में खीचते नहीं।
प्रभुमय जीवन व्यतीत करने वाले को कोई भी
अंश मात्र तकलीफ दे सकता नहीं
और अपनी शान्ति में कोई भी अशान्ति का
आरोपण कर सकता नहीं
ऐसा पक्का विश्वास करके
आत्मानंद की मधुरी गोष्टियें ही
श्रोताओं को सुनाने में जो मस्त है—वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु के हाथ में
भय को जीतने की शक्तियें है।
उद्वेग को विस्मृत करने का सामर्थ्य है।
कल्लोलता-मय स्मित, मोक्ष की सुहावनी आशा
और सुनहरे स्वप्न की जिसको भेट है।
विमलता और विशालता-समभावमयता
उसका उभय समय का प्रतिक्रमण है।

और हँसते हँसते ही जीना और हँसते हँसते ही मरना
यह जिसका परम पच्चखाण है,—वही आदर्श साधु।

आत्मवंचना की काली बादलियें
आदर्श साधु के जीवन प्रदेश में आती ही नहीं,
पाखण्ड या अभिमान के जहरी पवन
उस की सीमा को भी स्पर्श कर सकता नहीं।
चँचल तरंगों को जो देश निर्वासन सुनाता है।
और इच्छित प्राप्त करने के लिये जो
अपना तपोबल विकसित करता है—वही आदर्श साधु।

पापी को नहीं, किन्तु पाप मय मनोदशा को धिक्कारता है
जिसके धिक्कार में भी प्रेम हो।
जिसके धिक्कार में से भी स्नेह झरता हो।
इस स्नेह की शीतलता ऐसी प्रबल हो
कि पाप की अग्नि को बुझा देवे
इस प्रेम का बरफ ऐसा हो कि
पापी के अंतर को भी पिघला देवे।

आध्यात्मिक युद्ध और जिन्दगी; दोनों
आदर्श साधु एक ही स्वरूप है।

अडगं धैर्य और सहनशीलता
ये आदर्श साधु के आभूषण है।
'मैं' के स्थान पर 'अपन'
यह उसके 'व्यापक' ज्ञान का गौरव है।
और जिसके जहां जहां पांव गिरे वहां वहां।
कल्याणकारी और प्रतिभाशाली वातावरण खडा होता है
यही आदर्श साधु की महान पहिचान है।

खुशामद का मीठे जहर,
आदर्श साधु के साधुत्व को मार सकता नहीं।
गालियों की बरसात
उसके व्यक्तित्व की हनन कर सकती नहीं।
आराम की मुलायम गद्दी में सुला कर
इस योद्धा का जीवन अपहरण नहीं किया जा सकता।
और उसको कंटक का मुकुट पहिना कर
एक भी अश्रु आंख से गिरा सकते नहीं।
यह तो समभाव से सहनेवाला
महाअभिग्रही आदर्श साधु
आशा और हर्ष के संदेश ही उसकी मुखाकृति में भरे हैं
और प्रगति और पवित्रता के पाठ
जिसके जीवन पृष्ट में पड़े हैं वही आदर्श साधु।

असामान्य जीवन-लीला यह उसका इतिहास है।
अदभुत जीवन बाग यह उसके बिचरने की भूगोल है।
प्रतापी आत्मा का तेज यह जिसका 'हीप्नोटीज़म' है।
और अनंत ज्ञान दर्शन और चारित्र का
जो खुद को स्वामी माने—वही आदर्श साधु।

सच्चा साधु वैराग्य के नाम पर कंगालता को सर्जता नहीं
अहिंसा के नाम कायरता का संग्रह करता नहीं।
'आध्यात्मिकता' के नाम 'बगुला वृत्ति' को पोषता नहीं
और प्रभु के नाम पाखण्ड को पूजता नहीं

आदर्श साधु निष्क्रिय जीवन में से निकल कर
क्रियाकारक 'सामायिक' में रमण करता है।
स्थिति-चूस्तता में से खुद को हटा कर
झरने के माफिक बहता है।

अगाध शान्ति में से जो दिव्यता की
गहरी आवाज झेलता है।
कुदरत के तत्वों से भरपूर अपने आदर्श जीवन में से ही
युगांतर तक पढ़ा जावे वैसे शास्त्रों को जन्माता है।
दिखावट-बाह्य दिखावट जिनकी प्रकृति में ही नहीं है।
भीतर भीतर का गुप्त-प्रस्थान
यह जिसकी चढ़ती आत्मा का प्रवाह है—वही आदर्श साधु

आदर्श साधु अभिमान से नहीं—तुच्छता से नहीं,
किन्तु भव्यभावना से खुद को भव्यता का अधिकारी माने

और जिसके आत्मा के निर्मल संस्कार,
पवित्र भावना और विशुद्ध मनोदशाः
उसकी गैरहाजिरी में भी वातावरण में रमते हों।
हवा के प्रत्येक अणु में जीवित रहता हो!

जिसको किसी स्थान पर खिंचाने का न हो,
किन्तु अपने साधु-जीवन की प्रतिज्ञा
वीरता, पवित्रता, शक्ति और आत्मा की मोहिनी ही
जगत् को अपनी तरफ खींचती हो,
वही आदर्श साधु।

जिसके पांव की रज भी दुनिया को
सच्चा देव-मन्दिर बनावे ऐसी पवित्र है।
और जिसके, साधु-जीवन की समाप्ति
सब जगत को रंजन करे।
वर्तमान को दिपावे, और भूत के पट पर
अनेक सुखद और मीठी यादगीरियों की
लकीरें करता जावे।
और जगत् की रोतल सूरत पर
आनंद की मधुरी फरफर उड़ाता जावे—वही आदर्श साधु

आत्मबल जिसके मोक्ष का प्रथम साधन है।
नियमों का पालन यह जिसके
मोक्ष के चढ़ते उतरते पगथिये हैं।
और निश्चित 'ध्येय' पर पहुंचने के लिये जिसका
''मौन मंथन करना'' यही अचल ध्यान हैं
वही आदर्श साधु।

ऐसा आदर्श साधु आत्मा-परमात्मा के दीर्घ चिंतन में
बाहिरी सकल जंजालों को त्याग कर
भीतर में डूब जाता है।
रसमय तत्वज्ञान में मस्त रहता है।
अनंत के साथ संपूर्ण तादात्म्य साधता है।
और तेज तेज, और तेजमय होकर
सिद्धशिला में बैठे हुए
सिद्धों के प्रकाश में जाकर मिल जाता है।
प्रकाश में प्रकाश होकर प्रकाशता है।
और अन्त में सिद्ध-आत्मा बनता है
वही आदर्श साधु वन्दनीय है! वन्दनीय है!

अनंत शक्ति की शोध में जो आत्मा
अहर्निश परमात्मा बनने के लिये भ्रमण करता है।
प्रत्येक पल पल शान्ति का रेकार्ड रखता है।
प्रत्येक क्षण की सच्ची शान्ति की जोड़ करता है।
चेतन और प्रकाश के विमान पर उड़ता है।
ज्ञान और दर्शन के तेज से तपता है।
और कल्याण-भाव की अमृत प्याली पी करके
सर्वत्र कल्याण की ही वर्षा बरसा कर
आकाश मार्ग में आनन्द से उड़ जाता है
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु! यह तो आकाशी पक्षी!
गगन में विचरता पंखवाला विद्याधर।
ऐसे का जन्म जगत् को उज्वल बना।
ऐसी आत्मा का स्पर्श मात्र ही
पृथ्वी को पावन करे! धन्य है!

धन्य है! धन्य है!
जिनने ऐसे दिव्य साधु के भव्य दर्शन किये हैं।
उनको भी धन्यवाद है।
सकल जगत् ऐसे पवित्र व
पुण्यशाली के तप-तेज पर ही जी रहा है।
उनके समागम के लिये ही
आज और हमेशा जगत का जाप चालू है।
सुनोजी! सुनो! दूर दूर से आवाज आ रही है।
साधु की सात्विक आत्मा में से
वे संगीत सुर सुनाई पड़ते.....
झेलो, झेलो, जितना झेल सको उतना झेलो।

## ''शिवमस्तु सर्व जगत:''

सकल जगत का कल्याण हो! कल्याण हो!
सुंदरम्। सुखदायी!

कल्याणम्,

**कल्याणम्!**

**ॐ अर्हम्।**

***

ॐ ह्रीं अर्हम् नमः

# श्री धर्म-तीर्थ-शान्ति गुरुदेव

श्री शान्ति सेवा संघ
मांडोलीनगर